नागपुरी और खोरठा के गीतों में साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच०डी० हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूप रेखा

संकायः जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

विश्वविद्यालय नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय राँची

वर्ष 2025

शोध निर्देषक

डॉ0 अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक (खोरठा)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाडी महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

शोधार्थी

धरमेन्द्र गोप
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
विश्वविद्यालय नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

भूमिका:

झारखण्ड, जिसे 'झाड़ का प्रदेश' कहा जाता है, अपनी प्राकृतिक संपदा, जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की आदिवासी और मूलवासी परंपराएँ झारखण्ड की विशिष्ट पहचान का निर्माण करती हैं। इन परंपराओं में नागपुरी और खोरठा जैसी लोकभाषाएँ महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, जो सदियों से इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को स्वर प्रदान करते आ रही है। नागपुरी और खोरठा गीत न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि ये समाज के सुख-दुख, संघर्ष, परंपरा और परिवर्तन के जीवंत दस्तावेज भी हैं। पारंपरिक लोकगीतों के साथ-साथ इन भाषाओं के गीतों ने भी समाज के विविध पक्षों को अभिव्यक्त किया है। इनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और समसामयिक विषयों की प्रभावी प्रस्तुति देखने को मिलती है। विवाह, पर्व-त्योहार, कृषि, श्रम, प्रेम, भक्ति, वीरता और प्रतिरोध जैसे विषयों पर इन भाषाओं में गीतों की समृद्ध परंपरा है। संगीत और समाज, झारखण्डी समाज में गीत और नृत्य केवल उत्सवों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़े हुए हैं। नागपुरी और खोरठा गीतों में जनजीवन की झलक मिलती है- कहीं विरह की पीड़ा तो कहीं प्रेम की कोमल भावनाएँ, कहीं सामाजिक बंधनों पर प्रहार तो कहीं वीरता और संघर्ष का उत्साह। उदाहरणस्वरूप, 'बेटा कर बाप मांगे हजारों हजार, बेटी कर बाप कांदे झरो-झार'' जैसे गीत सामाजिक असमानताओं को उजागर करते हैं, वहीं 'सावधान रहबा रे देशा के जवान'' जैसे गीत युवाओं में देशभक्ति का जोश भरते हैं।

नागपुरी और खोरठा गीतों का योगदान, परंपरागत लोकगीतों की इस समृद्ध धरोहर को इन भाषाओं के गीतों ने नए विषयों, संवेदनाओं और तकनीकी बदलावों के साथ जोड़ा है। नागपुरी एवं खोरठा के गीत, सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सोशल मीडिया, यूट्यूब और अन्य तकनीकी का उपयोग कर इन भाषाओं को नए श्रोताओं तक पहुँचाया है। अब ये गीत गाँव, चौक, चौराहा तक ही नहीं बल्कि बड़े आयोजनों पर भी व्यापक रूप से सुने और सराहे जा रहे हैं। अध्ययन से

ज्ञात होता है कि नागपुरी और खोरठा क्षेत्रीय भाषाओं के गीतों ने झारखण्ड आंदोलन को प्रत्यक्ष रूप से अपने भाषा शैली से प्रात्सोहित एवं झारखण्ड आंदोलन को सफल बनाने में बढ़-चढ़ कर भूमिका निभाया है। इन गीतों का इतिहासिक पृष्ठभूमि को अध्ययन करने से पता चलता है कि किस तरह से इन गीतों के माध्यम से कठिन एवं विस्तृत बातों को सरल और संक्षेप में गीतों की सुंदर प्रस्तुति से रखा जाता रहा है। हमारे गीतों मंे संवादात्मक कला का मौजूदगी देखा जा सकता है जो प्रत्येक प्रयोजनों के अनुरूप व्यक्तियों को जागरूक या जनमत के लिए एकत्रित कर सकते हैं। जिसका उदाहरण के रूप में झारखण्ड राज्य में होने वाले कई स्थानिय से लेकर राष्ट्रीय स्तर का आंदोलन को देखा जा सकता है। झारखण्ड आंदोलन में भी खोरठा गीतों का योगदान उल्लेखनीय रहा है। 'झारखण्ड के मान करीहे ना अपमान रे, झारखण्ड के माटी दादा माई के समान रे' जैसे गीतों ने लोगों के मन में जागरूकता और आत्मसम्मान की भावना विकसित की। खोरठा गीतों ने समय के साथ सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और आधुनिकता के प्रभावों को प्रस्तुत किया है। वर्तमान में कई प्लेटफॉर्म पर खोरठा गीतों की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है, जिससे यह भाषा और इसका साहित्य नए आयाम प्राप्त कर रहा है।

हालाँकि, इन गीतों के साहित्यिक और राजनीतिक योगदान पर अभी तक व्यवस्थित अकादमिक शोध का अभाव है। इस शोध के माध्यम से नागपुरी और खोरठा गीतों द्वारा लोकसंस्कृति, भाषा, साहित्य और समाज पर डाले गए प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा। यह अध्ययन न केवल इन भाषाओं के समकालीन विकास को समझने में सहायक होगा, बल्कि नागपुरी और खोरठा गीत-साहित्य को व्यापक दृष्टिकोण से देखने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

प्रेरणा:

बचपन से ही नागपुरी गीतों का बड़ा श्रोता होने के नाते और अखड़ा के करीब घर होने के कारण मेरी रुचि नागपुरी संगीत और उसकी परंपरा में गहराई से विकसित हुई। अखड़ा न केवल हमारे मनोरंजन का केंद्र था,

बल्कि यह हमारे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा भी रहा है। यहाँ होने वाले सांस्कृतिक आयोजनों, गीत-नृत्य और रीति-रिवाजों ने मुझे नागपुरी गीतों की महत्व को और अधिक समझने का अवसर दिया। इन गीतों की भावनात्मक गहराई और प्रभावशीलता ने मुझे बार-बार आकर्षित किया, जिससे मैं इन गीतों को गुनगुनाने, नृत्य करने और इस संस्कृति के रंग में रंगने के लिए सहज ही प्रेरित हुआ। नागपुरी और खोरठा गीतों की प्रवृत्ति केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह प्रकृति की सुंदरता, देशभक्ति, सामाजिक समस्याओं, कुप्रथाओं, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण जैसे गंभीर विषयों को भी अपने गीतों में समाहित करने की दिशा में केंद्रित रही है। इन गीतों ने न केवल जनमानस को जागरूक किया, बल्कि उन्हें समाज के प्रति संवेदनशील भी बनाया है। अध्ययन के क्रम में यह जानकारी मिली कि राष्ट्रीय और झारखण्ड के आंदोलन में जनता को प्रेरित करने और उनके समर्थन को बढ़ावा देने में नागपुरी और खोरठा गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नागपुरी और खोरठा के गीतों, कविताओं और पदों ने आंदोलन में जोश और ऊर्जा का संचार किया, जिससे झारखण्ड को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित करने में सहायता मिली। आज भी ये गीत झारखण्ड की पहचान को बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

मेरे बचपन का अनुभव, जहाँ घर-परिवार में नागपुरी भाषा का व्यापक उपयोग होता था, मेरे लिए उतना ही आत्मीय है जितना माता-पिता से मेरा संबंध। गुरुओं के मार्गदर्शन और विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के कारण मेरा झुकाव इस शोध विषय की ओर और भी प्रबल हो गया। इन्हीं प्रेरणाओं से उत्साहित होकर मैं 'नागपुरी और खोरठा गीतों में साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य के लिए प्रयासरत हूँ। यह अध्ययन न केवल नागपुरी और खोरठा गीतों की सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्ता को रेखांकित करेगा, बल्कि इनके राजनीतिक प्रभाव को भी विस्तार से प्रस्तुत करेगा।

शोध का उद्देश्य:

मेरा शोध विषय नागपुरी और खोरठा गीतों में साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य इन गीतों में निहित साहित्यिक एवं राजनीतिक मूल्यों का गहन अध्ययन करना है। इस शोध के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- **नागपुरी और खोरठा गीतों के साहित्यिक महत्व को उजागर करना।**
- **आधुनिक गीतों में साहित्यिक विषयों का अध्ययन।**
- **आधुनिक युग में लोकगीतों की स्थिति का अध्ययन।**
- **नागपुरी और खोरठा के गीतों का प्रभाव का अध्ययन करना।**
- **नागपुरी और खोरठा भाषा की महत्व का अध्ययन।**
- **देश और राज्य निर्माण में गीतों का योगदान को जानना।**
- **साहित्य के विकास में इन गीतों का योगदान को जानना।**

शोध की प्रासंगिकता:

नागपुरी और खोरठा भाषा झारखण्ड की सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिनमें पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के गीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन गीतों ने साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ साहित्यिक, राजनीतिक चेतना जागृत करने, झारखण्ड आंदोलन को सशक्त बनाने और भाषा के प्रचार-प्रसार में भी बड़ी भूमिका निभाई। नागपुरी और खोरठा गीतों के माध्यम से सामाज के बुराइयों, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, देशभक्ति तथा जनजागरण जैसे विषयों को उजागर किया गया है। राष्ट्रीय एवं झारखण्ड आंदोलन में इन गीतों ने आंदोलनकारियों को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाई, जिससे पहले भारत फिर झारखण्ड स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित हुआ।

यह शोध नागपुरी और खोरठा गीतों में निहित साहित्यिक और राजनीतिक चेतना को समझने का प्रयास करेगा। इसके माध्यम से इन गीतों की विषयवस्तु, शैलीगत विशेषताओं और समाज पर उनके प्रभाव का

विश्लेषण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन यह भी दर्शाएगा कि तकनीकी युग में इन गीतों की प्रासंगिकता कितनी बनी हुई है और इनका प्रचार-प्रसार किस प्रकार हो रहा है। यह शोध आने वाली पीढ़ियों को इन गीतों के साहित्यिक और राजनीतिक योगदान से अवगत कराएगा और झारखण्ड की भाषा एवं साहित्य को संरक्षित करने में सहायक सिद्ध होगा।

परिकल्पना:

नागपुरी और खोरठा गीतों में साहित्यिक और राजनीतिक चेतना हमारे समाज को जागृत करने और संस्कृति को संरक्षित रखने के साथ हमारे संस्कृति के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान रखती है। यह गीत हमारे सांस्कृतिक परंपराओं का दर्पण है। यही गीत हमारे समाज सुधार और परिवर्तन का माध्यम भी है। पहले की गीतों में यानी लोकगीतों में जो परंपरा से चलते आ रहे हैं उनमें कृषि प्राकृतिक सौंदर्य, राष्ट्रवाद, संघर्ष, आदिवासी अस्मिता, शोषण जैसे विषयों की प्रमुखता देखी जाती थी वही आज के गीतों में अर्थात आधुनिक गीतों में सामाजिक समानता, सामाजिक न्याय, नारी चित्रण, राष्ट्रीयता, सामाजिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे नए विषय उभर कर सामने आ रहे हैं जो नागपुरी और खोरठा गीतों की महत्व को बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रयास के रूप में देखा जा सकता है और इसी से हम या स्पष्ट रूप में समझ सकते हैं कि यह गीत केवल मनोरंजन का माध्यम ही नहीं बल्कि सामाजिक साहित्यिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक बदलावों के विस्तृत दस्तावेज भी है। झारखंड आंदोलन में इन गीतों ने आंदोलनकारियों को अपने गीतों से प्रेरित किया ठीक इसी प्रकार हमारे भारत देश को आजाद करने के समय हमारे ये लोकभाषियों द्वारा कई महत्वपूर्ण ऊर्जावान गीतों का प्रयोग किया गया जिसे लोगों में जन चेतना का प्रभाव हुआ और आज हमारे सामने परिणाम स्वरुप स्वतंत्र भारत और एक स्वतंत्र राज्य झारखंड राज्य के रूप में देख सकते हैं।

उदाहरण स्वरूप- 'अब नागपुर बोली, ढेर दिन सुतल रहे, अब तो नजइर खोली', 'बाघिन कर कोर से छवा लंभा लूटत हे' जैसे कई गीत है

जो आंदोलन को गति और नौजवानों को ऊर्जा देने का काम किया है आज तकनीक के माध्यम से इन गीतों का व्यापक स्तर पर विस्तार हुआ है जिसे हमारे संस्कृति का प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देखा जा रहा है। हालांकि आधुनिकता के प्रभाव के कारण पारंपरिक गीतों की मौलिकता को चुनौतियां भी मिली है जिसे लोकगीतों में आंशिक बदलाव देखा जा सकता है। इस शोध कार्य के माध्यम से गहन विश्लेषण किया जाएगा और देखने का प्रयास होगा कि आधुनिक नागपुरी और खोरठा गीतों ने साहित्यिक और राजनीतिक चेतना को कैसे आगे बढ़ा रहे हैं और किस प्रकार समाज में यह गीत जन जागरूकता और सुधार का एक व्यापक माध्यम बने हैं।

शोध की महत्व :

यह शोध विषय नागपुरी और खोरठा के गीतों का साहित्यिक एवं राजनीतिक जागरूकता को गहराई से समझने का प्रयास करेगा नागपुरी और खोरठा के गीत सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं होते बल्कि यह गीत साहित्य, संस्कृति, संघर्ष और समाज के बदलाव के दर्पण भी होते हैं राष्ट्रीय एवं झारखंड के आंदोलन से संबंधित गीत झारखंड के समाज संस्कृति की पहचान एवं झारखंडियों की अधिकार की लड़ाई और सामाजिक न्याय की भावना इन गीतों में स्पष्ट रूप से दिखती है या शोध के माध्यम से झारखंड आंदोलन, श्रम आंदोलन, सामाजिक सुधार आंदोलन और क्रांतियां की भूमिका को गहन रूप में विश्लेषित किया जाएगा। इसके साथ ही साथ या शोध नागपुरी और खोरठा गीतों के साहित्य एक चेतना और उनके साहित्यिक विकास को भी उजागर करेगा। आज के वैश्वीकरण के दौर में पारंपरिक गीतों पर पड़ रहे प्रभाव और उनके आधुनिक परिवर्तन को समझने का प्रयास भी इस शोध का मुख्य बिन्दु होगा। यह शोध अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अतः यह शोध सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक जागरूकता को समझने सहेजने और आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य करेगा।

शोध प्रविधि :

- **विश्लेषणात्मक**
- **ऐतिहासिक**
- **तुलनात्मक**
- **साक्षात्कार**

शोध उपकरण :

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है-

- **शोध से संबंधित पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ**
- **टेप रिकौडर/सीडी**
- **कैमरा**
- **इंटरनेट**
- **कम्प्यूटर**
- **इंटरनेट**

शोध विषय

नागपुरी और खोरठा के गीतों में साहित्यिक एवं राजनीतिक चेतना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय: नागपुरी और खोरठा गीतों का उद्भव और विकास

- **(क) नागपुरी एवं खोरठा गीतों का सामान्य परिचय**
- **(ख) नागपुरी एवं खोरठा गीतों का काल विभाजन**
- **(ग) नागपुरी एवं खोरठा गीतों का समाज पर प्रभाव**

द्वितीय अध्याय: झारखण्ड की संस्कृति और गीत परंपरा

- **(क) झारखण्ड की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि**
- **(ख) नागपुरी और खोरठा संस्कृति का परिचय**
- **(ग) नागपुरी एवं खोरठा गीतों में संस्कृति**

तृतीय अध्याय: नागपुरी और खोरठा गीतों में साहित्यिक चेतना का विश्लेषण

- **(क) गीतों की भाषा, शैली और संरचना**
- **(ख) गीतों में प्रयुक्त प्रतीक, बिंब और अलंकार**
- **(ग) गीतों में साहित्यिक विशेषताएँ**
- **(घ) साहित्यिक चेतना का विकास**

चतुर्थ अध्याय: नागपुरी और खोरठा गीतों में जनचेतना का स्वर

- **(क) नागपुरी एवं खोरठा गीतों में सामाजिकता**
- **(ख) नागपुरी एवं खोरठा गीतों में नारी चित्रण**
- **(ग) सामाजिक एकता और जागरूकता में गीतों की भूमिका**
- **(घ) आदिवासी अस्मिता और संघर्ष आधारित गीत**

पंचम अध्याय: नागपुरी और खोरठा गीतों में राजनीतिक चेतना और उनकी प्रासंगिकता

(क) राजनीतिक आंदोलनों में भूमिका

(ख) राजनीतिक प्रचार-प्रसार में भूमिका

(ग) राजनीतिक समस्याओं और जागरूकता फैलाने का माध्यम

(घ) स्वतंत्र भारत एवं पृथक झारखण्ड राज्य के निर्माण में योगदान

(ङ) युवाओं में राजनीतिक चेतना का संचार

षष्ठ अध्याय: नागपुरी और खोरठा गीतों में आधुनिकता का प्रभाव

(क) लोकगीतों और आधुनिक गीतों में अंतर

(ख) सोशल मीडिया और फिल्मी गीतों का प्रभाव

(ग) गीतों के व्यावसायीकरण का प्रभाव

(घ) नए विषयों और मुद्दों में गीतों का विकास

सप्तम् अध्याय: गीतों का संरक्षण और संवर्धन

(क) नागपुरी और खोरठा गीतों के संरक्षण की आवश्यकता

(ख) शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में गीतों का समावेश

(ग) नागपुरी और खोरठा गीतों के संकलन और दस्तावेजीकरण की पहल

(घ) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लोकगीतों की पहचान

(ङ) सरकार द्वारा गीतों के संवर्धन हेतु प्रयास

उपसंहार

परिशिष्ट

- **आधार ग्रंथ सूची**
- **संदर्भ ग्रंथ सूची**

- **साक्षात्कार**
- **फोटोग्राफ**

नोट: आवश्यकतानुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन प्रार्थनीय होगा।

शोध निर्देषक

डॉ0 अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक (खोरठा)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाडी महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

शोधार्थी

धरमेन्द्र गोप
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
विश्वविद्यालय नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

आधार ग्रंथ की सूची

1. कुमार, राम क्षितीश, रूप (नागपुरी गीत संग्रह), झारखण्ड झरोखा, 2024
2. कुमार, विनोद, खोरठा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृथ्वी प्रकाशन, 2019
3. केशरी, डॉ० बी०पी०, नागपुरी भाषा का उद्भव और विकास, नागपुरी संस्थान, 2006
4. केशरी, डॉ० बी०पी०, नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस, झारखण्ड झरोखा, 1994
5. कुमारी, डॉ० बासंती, टोंगरी आउर पझरा, विजय प्रकाशन रांची, 2007
6. गौंझू, डॉ. गिरिधारी राम, झारखण्ड का लोकसंगीत, झारखण्ड झरोखा, 2015
7. घाँसी, रितु, रस रंग (खोरठा लोकगीत संग्रह), पृथ्वी प्रकाशन, 2017
8. झा, डॉ0 ए0के0, खोरठा गद्य पद्य, बोकारो खोरठा कमिटि, 1989
9. तिवारी, डॉ० उमेश नन्द, आधुनिक नागपुरी साहित्य की विभिन्न विधाएँ, (झारखण्ड झरोखा, 2014
10. दिनमणि, दिनेश, सोहान लागे रे (खोरठा गीत एवं पहेली संकलन), पृथ्वी प्रकाशन, 2006
11. पानुरी, श्रीनिवास, आँखिक गीत, श्री नारायण महतो, धनबाद, 2011
12. महतो, डॉ० युगेश कुमार, नागपुरी के विवाह गीत, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, 2018
13. महतो, डॉ अवध बिहारी, खोरठा साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, संवाद मीडिया नई दिल्ली, 2018
14. महतो, डॉ0 युगेश कुमार, गेंदा फूल, पृथ्वी फाउंडेशन, 2017
15. मिश्र, डॉ0 शकुन्तला, नागपुरी लोकसाहित्य गोछा, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2012

संदर्भ ग्रंथ की सूची

1. ओहदार, डॉ0 बी0एन0, खोरठा भाषा एवं साहित्य, मार्गदर्शन, 2007
2. केशरी, डॉ0 बी0, पी0, नागपुरी भाषा का उद्भव और विकास (नागपुरी संस्थान), 2006
3. कुमारी, डॉ0 बसंती, बनफूल भाग-2, विषम प्रकाशन, राँची, 2008
4. झा, ए0के0, एक टोकी फूल 'तितकी', झारखण्ड झरोखा, 2012
5. तिवारी, डॉ. उमेश नंद, नागपुरी कवि और उनकी रचनाएँ, झारखण्ड झरोखा, 2015
6. तिवारी, उमेश नन्द, आधुनिक नागपुरी साहित्य, झारखण्ड झरोखा, 2014
7. नायक, मनपूरन, नागपुरी लोकगीत और मंदर के ताल, झारखण्ड झरोखा, 2015
8. महतो, बीरेन्द्र कुमार, नागपुरी भाषा व्याकरण एक अध्ययन, शिंवागन पब्लिकेशन, पटना, 2012
9. निधि, डॉ. विद्योतमा, नागपुरी कर साहितिक निबंध, झारखण्ड झरोखा, 2012
10. बिहारी, बासु, कोरइया फूल (सिंगार गीत संग्रह)
11. भारत, शांति, बेलन्दरी (गीत संग्रह), बोकारो खोरठा कमिटि, 1990
12. महतो, डॉ. बीरेंद्र कुमार, नागपुरी भाषा साहित्यः अतीत आउर वर्तमान, शिवांगन पब्लिकेशन, 2019
13. मानिक, शिवनाथ प्रमाविक, खोरठा लोक साहित्य, पृथ्वी प्रकाशन, 1985
14. राय, प्रमोद कुमार, मनमीतः नागपुरी गीत काव्य संग्रह, झारखण्ड झरोखा, 2016
15. साहू, डॉ0 त्रिवेणी नाथ, आधुनिक नागपुरी कवि मनक साहित्यिक परिचय, मार्गदर्शन, 2018

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

1. अगुआ - जोय कुमार महान, जलयाई गुड़ी, (1981)
2. आदिवासी - राधा कृष्ण, फरवरी, (1947)
3. इंजोर - मधुपुर देवघर, घनंजय प्रसाद, (1995)
4. गोतिया (त्रैमासिक) - डॉ0 बीरेन्द्र कुमार महतो, ठुमसा टोली, चुटिया, राँची।
5. झारखण्ड आराधना - गोरसनर मिशन
6. डहर - ईश्वरी प्रसाद, (1972)
7. तितकी - कतरास, धनबाद, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', (1977)
8. नागपुरी - योगेन्द्रनाथ तिवारी, (1961)
9. पझरा - नागपुरी साहित्य संस्कृति मंच, राँची।
10. लुआठी - बालीडीह, बोकारो, गिरधारी गोस्वामी, आकाश खूंटी, (अक्टूबर 1999)